उसकी मृत्यु की समानता में और उसके जी उठने की समानता में

''क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे'' (रोमियों 6:5)।

नए नियम के बपतिस्मे में हम एक समानता पाते हैं, अर्थात् मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और जी उठने की समानता (रोमियों 6:3-6)।

जब एक अनजान पापी यीशु मसीह में विश्वास करता है (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराता है (लूका 13:3, 5), और यीशु में अपने विश्वास का मनुष्यों के सामने अंगीकार करता है (मत्ती 10:32-33), तब उसे मसीह में बपतिस्मा दिया जा सकता है, जिस तरह से कूश देश के रहनेवाले खोजे ने प्रेरितों 8:36-39 में बपतिस्मा लिया था। जब कोई मसीह में बपतिस्मा लेता है, तब वह उसकी मृत्यु और जी उठने की समानता में जुट जाता है।

बपतिस्मा मसीह की मृत्यु में है (रोमियों 6:3), जहां पर उसका लोहू सारे जगत के मनुष्यों के लिये बहाया गया, ताकि उन्हें उद्धार और पापों की क्षमा मिल सकें (कुलुस्सियों 1:13-14)।

बपतिस्मे में हम उसके साथ गाड़े जाते हैं (कुलुस्सियों 2:12)। जिस तरह से मसीह की देह को क्रूस पर से उतारकर यूसुफ अरमतियाह की कब्र में रखा

गया था, उसी तरह से एक पापी की देह को बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र में गाड़ा जाता है।

बपतिस्मे में हम उसके साथ जी उठते हैं। (कुलस्सियों 2:12-13) ...''नए जीवन की सी चाल चलने के लिये जिलाया गया'' (रोमियों 6:4)।

बपतिस्मा हमें मसीह के अन्दर प्रवेश करा देता है, जहां पर ''सब प्रकार की आत्मिक आशीषें स्वर्गीय स्थानों में हैं'' (इफिसियों 1:3), जिसमें शामिल है उद्धार (2 तीमुथियुस 2:10), अनंत जीवन (1 यूहन्ना 5:11), छुटकारा, और पापों की क्षमा (कुलुस्सियों 1:13-14)।

बपतिस्मा परमेश्वर के प्रति आज्ञा मानने का एक कार्य है। मत्ती 28:18-20 और मरकुस 16:15-16 में यीशु ने एक विशेष महान आज्ञा दी थी। इसमें लिखा है- ''जाओ और सिखाओ,'' ''चेला बनाओ,'' और ''पिता, पुत्र, और पवित्र-आत्मा के नाम से उन्हें बपतिस्मा दो।''

जब तक हम उसकी आज्ञाओं का पालन नहीं करेगें तब तक हमारा जीवन के वृक्ष पर कोई अधिकार नहीं होगा, और तब तक हम स्वर्ग के फाटक में भी प्रवेश नहीं कर पाएंगे (प्रकाशितवाक्य 22:14)।

पतरस, जो कि पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा से भरा हुआ था, उसने यहूदियों को आज्ञा दी थी, कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)।

एक बार फिर, कुरनेलियुस के घर पर (प्रेरितों 10:48), पतरस ने यह आज्ञा दी थी, कि स्वयं कुरनेलियुस और उसका सारा घराना प्रभु यीशु में बपतिस्मा लें।

यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे (यूहन्ना 14:15 और यूहन्ना 15:14)।

प्रेरितों की पुस्तक में **पवित्र आत्मा ने** बपतिस्मे के विषय पर उदाहरण पर उदाहरण दिये है, जब लोगों ने सुसमाचार को सुना और उस पर विश्वास किया था। आईये इन आयतों पर ध्यान दें और स्वयं इसे आप ही पढ़िये: (प्रेरितों 2:41; 8:12-13; 8:38-39; 9:18; 10:48; 16:15, 33, 18:8, और 19:5)। हर एक घटना में वचन को सिखाया गया, जिससे विश्वास उत्पन्न

हुआ, और जिसके बाद लोगों ने अपने पापों से मन फिराया, और अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अंदर जाकर बपतिस्मा लिया, जैसा की पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन आज्ञा दी थी। जब लोगों ने बपतिस्मा लिया तब उन्होंने उद्धार पाया, और प्रभु ने स्वयं उन्हें आप ही अपनी कलीसिया में मिला दिया (मरकुस 16:15-16; प्रेरितों 2:47; 1 पतरस 3:21)।

परमेश्वर ने संसार में रहनेवाले हर एक ज़िम्मेदार व्यक्ति के लिये सरल और साधारण सी आज्ञा दी है। जो लोग परमेश्वर की सुनते हैं, उस पर विश्वास रखते हैं, और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उनको अनंत उद्धार मिलेगा (इब्रानियों 5:8-9)। केवल विश्वास द्वारा कार्य को पूरा नहीं किया जा सकता, अर्थात् केवल विश्वास द्वारा उद्धार को प्राप्त नहीं किया जा सकता (याकूब 2:17, 19 और 24)। यदि हम परमेश्वर की आज्ञा को मानने से इंकार करते हैं तथा उसकी आज्ञा पर ध्यान नहीं देते, तब हम क्रूस पर बहाये हुए उसके बेशकीमती लोहू में पाई गई उद्धार की सामर्थ का तिरस्कार करते हैं। क्यों नहीं हम मन फिराते और बपतिस्मा लेतें? जैसे कि पिन्तेकुस्त के दिन 3000 लोगों ने किया था (प्रेरितों 2:41)? क्या आप आज ऐसा करने के लिये तैयार हैं?

बहुत से झूठे शिक्षक आप को बोलेंगे कि आप केवल ''यीशु को ग्रहण करें'' और ''उद्धार पाएं''- और यदि आप की इच्छा हो, तो आप बाद में बपतिस्मा ले सकते है। हम देखते हैं, कि मसीह के नए नियम में किसी को भी ऐसा करने को नहीं कहा गया था। जैसा की हनन्याह ने तरसुस के रहनेवाले शाऊल को बोला था, ''अब क्यों देर करता है? उठ बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।

जब कूश देश के रहनेवाले खोजे ने फिलिप्पुस के मुंह से मसीह का प्रचार सुना, तब वह और इंतजार न कर सका अथवा वह अपने आप को रोक न सका और उसने कहा, ''देख यहा जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?'' तब फिलिप्पुस और खोजा दोनों रथ से नीचे उतर गए, और फिर दोनों जल में उतर पड़े, और तब फिलिप्पुस ने खोजे को 'बपतिस्मा दिया' (प्रेरितों 8:38)। फिर हम देखते हैं, कि खोजा आनंद करता हुआ अपने मार्ग चला गया (प्रेरितों 8:39)। **खोजे को मसीह की मृत्यु की समानता में जुटाया गया और मसीह के जी उठने की समानता में उठाया गया था।** अर्थात् अब वह

''मसीह में'' है जहां पर वह पूरे दावे और अधिकार के साथ ''आत्मिक आशीषें'' जो की स्वर्गीय स्थानों में हैं प्राप्त कर सकता है। (गलतियों 3:27; इफिसियों 1:3)।

कितनी ही सुन्दर समानता परमेश्वर ने मानव जाति को दी है। खोजा कोई छोटा बच्चा नहीं था। जब वह जल के बगल में खड़ा था, तब उस पर पानी से छिड़काव नहीं किया गया था। जब उसने अपने प्रभु के बारे में सुना, तब उसमें विश्वास उत्पन्न हुआ। इस विश्वास ने उसे कार्य करने को कहा। वह एक ईमानदार विश्वासी था। उसका विश्वास कार्य करने लगा (याकूब 2:20)। उसके विश्वास ने प्रेम से कार्य किया (गलतियों 5:6)। उसने सम्पूर्ण रूप से अपने आप को परमेश्वर की इच्छा के आधीन कर डाला (मत्ती 7:21), और कहा कि ''अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? और जल के भीतर बपतिस्मा लिया।

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398
नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

सदा बना रहने वाला सुसमाचार

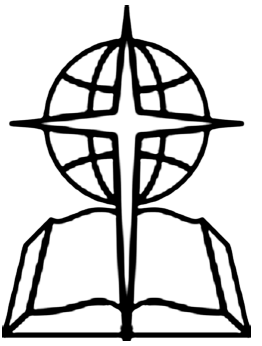

''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा: और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था'' (1 पतरस 1:25)।

''फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर के रहनेवालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था'' (प्रकाशितवाक्य 14:6)।

इस बात में कोई संदेह नहीं, कि **मसीह का सुसमाचार** एक महान संदेश है जो कि मनुष्यजाति के उद्धार के लिये दिया गया है। यह सुसमाचार बहुत शक्तिशाली और बहुत लाभ पहुंचानेवाला, और एक ऐसा मज़बूत वादा है जो मनुष्य के लिये संभव है, कि वह इसे प्राप्त कर सकता है। यह ''अच्छी खबर'' अथवा सुसमाचार जो कि परमेश्वर के पुत्र ने अपने चेलों के द्वारा मनुष्य को दिया था, न केवल यह स्वभाव में अनंत है, परन्तु इसमें और भी बातें शामिल हैं जो कि हमारे उद्देश्य और जीवन से संबंध रखती है। ''क्योंकि उसकी ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से संबंध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है'' (2 पतरस 1:3)। इस पर ध्यान दें:

सुसमाचार की सामर्थ (रोमियों 1:16): ''क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' यीशु पर केवल विश्वास करने से कोई उद्धार नहीं पा सकता है, परन्तु यीशु में अपने विश्वास के कारण वह उद्धार की ओर बढ़ सकता है। क्योंकि सच्चा विश्वास उसे अपने पापों से मन फिराने, सबके सामने यीशु के नाम का अंगीकार करने, पानी के अंदर

जाकर बपतिस्मा लेने, और एक विश्वासी जीवन व्यतीत करने के लिये आगे बढ़ा सकता है।

सुसमाचार के तथ्य (1 कुरिन्थियों 15:1-4): हां, परमेश्वर के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मारा गया, गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा-फिर कभी न मरने के लिये। इन तथ्यों की जानकारी सैकड़ों लोगों को थी जिन्होंने यीशु को जी उठते हुए देखा था, जिन्होंने उससे बातचीत की थी, और उसे छूआ था, और उसके साथ खाना खाया था, और जिन्होंने इस बात की गवाही दी थी, कि किस तरह यीशु अपने पिता के दाहिने हाथ स्वर्गारोहण हुआ है।

सुसमाचार की घोषणा करना (मरकुस 16:15-16): हम देखते हैं कि सुसमाचार की शुरूआत सबसे पहले पिन्तेकुस्त के दिन यरुशलेम में हुई थी (प्रेरितों 2)। उस दिन से लेकर अब तक उद्धार, छुटकारा, पापों की क्षमा, और अनंत जीवन का पाठ पूरे जगत में रहनेवाले हर एक मनुष्य को दिया गया है (रोमियों 10:18 और कुलस्सियों 1:5-6, 23)। इस बात पर हम ध्यान दें, कि पहली शताब्दी में न कोई आधुनिक संचार व्यवस्था थी, और न ही कोई आधुनिक यातायात की सुविधा थी। इन सब मुश्किलों के बावजूद सुसमाचार का संदेश मुंह द्वारा और लेखों के ज़रिए संसार के कोने-कोने में गया।

सुसमाचार में बदलाव लाने का खतरा: पहली शताब्दी में जब पौलुस ने गलतियां में रहनेवाली मसीह की मण्डलियों को लिखा, तब उसने कुछ लोगों के बारे में उन्हें कढ़ी चेतावनियां दी थीं, वो लोग उन्हें परेशान करेंगे, और परमेश्वर के सुसमाचार को बदल डालेंगे। कई शताब्दियों के बाद भी हम देखते है कि यह बात बिल्कुल सच उभर कर आई है। अभी भी कुछ लोग परमेश्वर के सुसमाचार को बदलने की कोशिश कर रहे हैं। पहली शताब्दी में यहूदी शिक्षकों ने गलतियां में रहनेवाले मसीहियों को मूसा की व्यवस्था के दोबारा पीछे चलने को कहा था। आज के हम इस सम्प्रदायिक संसार में भी इसी बात को देखते हैं, जहां पर इस बात को सिखाया जाता है, कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इस बात को सिखाते हैं, कि आप पापियों की एक विशेष दुआ करके उद्धार प्राप्त कर सकते है। कुछ साम्प्रदाय इस बात को भी सिखाते हैं, कि आज भी कुछ लोगों को परमेश्वर की तरफ से विशेष दर्शन मिलता है जिसके द्वारा उस व्यक्ति को उद्धार प्राप्त होता है। लेकिन हम इस बात को बखूबी देखते हैं, कि उद्धार के विषय में यह सारी बातें परमेश्वर के सुसमाचार के विरोध में हैं। बाइबल हमें साफ़ बताती है, कि उद्धार प्राप्त करने के लिये सबसे पहले हमें परमेश्वर के वचन को सुनने की आवश्यकता है (रोमियों 10:17); दूसरा, हमें इस बात पर विश्वास करने की आवश्यकता है कि यीशु जीवते परमेश्वर

का पुत्र है; तीसरा, हमें सबके सामने यीशु के नाम का अंगीकार करने की आवश्यकता है (मत्ती 10:32-33); चौथा, हमें अपने पापों से मन फिराने की आवश्यकता है (लूका 13:3; प्रेरितों 2:38); और पांचवा, हमें अपने पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अंदर जाकर बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है (मरकुस 16:16)। इन पांचों आज्ञाओं को मानने के बाद ही मनुष्य उद्धार प्राप्त कर सकता है।

इसलिये हमें निरंतर सावधान रहने की आवश्यकता है ताकि हम अपने आप को झूठी शिक्षाओं से बचा कर रखें (गलतियों 1:8-9)।

कुछ आज्ञाएं जिन्हें हमें मानना हैं: जब यीशु पृथ्वी पर था, तब उसने यह आज्ञा दी थी कि मनुष्य उस पर विश्वास करें (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराएं (लूका 13:3, 5), सबके सामने इस बात का अंगीकार करें कि यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 10:32-33), और फिर अपने पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अंदर जाकर बपतिस्मा ले (मरकुस 16:16; मत्ती 28:18-20)। यीशु ने मनुष्य को इस बात की भी सलाह दी थी, कि वह अपने आप से इन्कार करे, और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए उसके पीछे हो ले। इन आज्ञाओं को न केवल सुनना आवश्यक है बल्कि इस पर विश्वास करना भी आवश्यक है, परन्तु इन आज्ञाओं को मानना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है (प्रकाशितवाक्य 22:14; मत्ती 7:21)। इब्रानियों का लेखक सारी मनुष्यजाति को कहता है, कि वे इस बात पर ध्यान दें, कि यीशु अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया (इब्रानियों 5:8-9)।

प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करना: सुसमाचार के अंदर जो हम प्रतिज्ञाएं प्राप्त करते हैं, वह मनुष्य को कहीं और नहीं प्राप्त हो सकती। इन प्रतिज्ञाओं के बारे में प्रेरित पतरस इस प्रकार से कहता है, कि यह बहुत ''बहुमूल्य और बड़ी प्रतिज्ञाएं हैं: ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर, जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के समभागी हो जाओ'' (2 पतरस 1:4)। इन प्रतिज्ञाओं में शामिल है: पाप और मृत्यु से आज़ादी, विश्वास से धर्मी ठहरना, और परमेश्वर की इच्छा का आज्ञापालन करना, और अपने प्रभु और पिता के साथ उस स्थान में अनंत जीवन व्यतीत करना जहां पर सारी वस्तुएं नई बनाई जाएगी (प्रकाशितवाक्य 21 और 22)। अब कोई मृत्यु न रहेगी, और न शोक, और न आंसू, और न पीड़ा रहेगी- यह कुछ बहुमूल्य और बड़ी प्रतिज्ञाएं हैं, उन लोगों को मिलेगी जो सुसमाचार को सुनेगें, उस पर विश्वास करेंगे, और सुसमाचार की आज्ञाओं को मानेंगे।

एक चुनौती: सुसमाचार मानवजाति को सबसे बड़ी चुनौती देता है जो पहले किसी को कभी नहीं दी गई थी। इस संसार में लगभग 6 अरब लोग हैं जिसमें से अधिकतर लोग परमेश्वर में विश्वास नहीं रखते। ये लोग मसीह की कलीसिया के

बाहर हैं, वे बिना परमेश्वर और बिना किसी आशा के है। परन्तु सुसमाचार के द्वारा हमें शांति और आशा मिल सकती है। हमें ''भले काम करने में साहस नहीं छोड़ना चाहिए।'' हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए, कि अगर हम ''ढीले न हो तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' (गलतियों 6:9)। जो भी योग्यताएं हमारे पास हैं, हमें इन योग्यताओं को निश्चय ही लोगों को सुसमाचार सिखाने, उनको एक मसीही बनने के लिये प्रोत्साहित करने, सुसमाचार की आज्ञा को मानने, और एक मसीही जीवन व्यतीत करने के लिये इस्तेमाल करना चाहिए। परमेश्वर की नज़र में हम केवल एक प्रतिभाशाली आदमी या औरत हो सकते है, परन्तु सावधान रहे कि हम अपनी योग्यताओं और प्रतिभाओं को पृथ्वी में न गाड़े! परमेश्वर उन लोगों के प्रति हमदर्दी नहीं दिखाएंगा जो लोग उसके लिये फल नहीं लायेंगे। हम इस बात के और हमेशा इस बात के ज़िम्मेदार रहेंगे, कि किस तरह से हम सुसमाचार को सुनते और उस पर ध्यान देते है। हम सब प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करने के लिये सुसमाचार के द्वारा बुलाए गए हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। इस बुलाहट को सुनना और इस पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। इसी कारण पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया से कहा था- ''इसलिये हे भाइयो, स्थिर रहो; और जो-जो बातें तुम ने चाहे वचन या पत्री के द्वारा हम से सीखी हैं, उन्हें थामे रहो'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:15)। इस बात पर कोई संदेह नहीं, कि सुसमाचार कितना प्रशंसनीय और उत्तम है।

परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उसने सामर्थ से भरी हुई सुसमाचार की भेंट हमें दी है। आईये हम सब अपने प्रेम और धन्यावादों को परमेश्वर को दें, जिसने सुसमाचार के द्वारा हमें उद्धार का मार्ग दिखाया है, ताकि हमें हमारे पापों से मुक्ति प्राप्त हो सकें। परमेश्वर आपको आशिष दें।

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

यीशु में हमारी विजय

''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है'' (1 कुरिन्थियों 15:57)।
''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है'' (2 कुरिन्थियों 2:14)।

मनुष्यजाति एक ऐसे युद्ध में शामिल है जहां पर संघर्ष अभी भी जारी है। यह पाप और मृत्यु पर विजय पाने की एक ऐसी लड़ाई है जिसका कोई अन्त नहीं है।

प्रेरित पौलुस ने हमें इस बात का स्मरण कराया था, कि वह एक ''अच्छी कुश्ती लड़ चुका है,'' ''उसने अपनी दौड़ पूरी कर ली है,'' और ''उसने अपने विश्वास की रखवाली की है।'' ऐसा करके उसने अपने लिये धर्म का वह मुकुट रखा है, जिसे प्रभु जो धर्मी और न्यायी है, उसे उस दिन देगा और केवल उसे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं (2 तीमुथियुस 4:8)।

इस युद्ध से कोई बचाव नहीं है। परमेश्वर ने हमें एक सिपाही के नाते बुलाया हैं, परन्तु हमें परमेश्वर के कार्य के लिये अपने आप को एक स्वयं सेवक के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। पौलुस ने तीमुथियुस को यह आदेश दिया था, कि वह ''यीशु मसीह में बलवन्त रहे'', और ''मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान दुख उठाएं'' (2 तीमुथियुस 2:1-3)। पौलुस, तीमुथियुस को याद दिलाता है, कि वह अपने आप को संसार के कामों में न फंसाए, क्योंकि उसे अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करना है जिसने उसे एक सिपाही के नाते बुलाया है (2 तीमुथियुस 2:4)।

इस युद्ध को लड़ने के लिये परमेश्वर ने हमें बिना किसी हथियार या गोलाबारूद के हवाले नहीं छोड़ा। इफिसियों 6 में हम देखते हैं, कि पवित्र आत्मा ने पौलुस का मार्गदर्शन किया था, ताकि वह इस बात की रूपरेखा खींच सके, कि एक मसीह को किस तरह के कवच की ज़रूरत पड़ती है? पौलुस मसीहीयों को आज्ञा देता है, कि ''वे परमेश्वर के सारे हथियार बांध ले ताकि वे शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सकें'' (इफिसियों 6:10-11)।

इस कवच में शामिल है: सत्य की कमर की पेटी, धार्मिकता की झिलम, पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते, आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, और प्रार्थना तथा सतर्कता, जो कि शत्रु से रक्षा प्राप्त करने के लिये आवश्यक वस्तुएं हैं।

शत्रु की पहचान करने के लिये परमेश्वर हमारी सहायता करता है। ''सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)।

परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के द्वारा बुलाया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14), ताकि हम अपने उद्धारकर्ता यीशु मसीह के पीछे हो लें जो कि हमारा कपतान है (इब्रानियों 2:10)। यह कपतान पीड़ा सहने के द्वारा ही सिद्ध ठहराया गया। उसने अपने आप को इस बात से साबित किया, कि उसने पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, और ऐसा करके उसने हमारे लिये अनंत छुटकारा प्राप्त किया (इब्रानियों 9:12)।

यह छुटकारा केवल यीशु मसीह में ही मिल सकता है (इफिसियों 1:7, कुलुस्सियों 1:13-14), और इसे उसके लहू के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है, ताकि हमें यीशु में छुटकारा और पापों की क्षमा मिल सकें।

इस सवाल का उत्तर, कि किस तरह से, और कब मुझे छुटकारा और अपने पापों से क्षमा प्राप्त होती है, बिल्कुल इस सवाल के समान है, कि किस तरह से मैं मसीह के अन्दर हो सकता हूं?

परमेश्वर ने इस सवाल को बिना उत्तर दिए नहीं छोड़ा। रोमियों 6:3-5 और गलतियों 3:26-27 में हमें बताया गया है, कि किस तरह से हम मसीह के अन्दर हो सकते हैं, और किस तरह से हम उसकी सेना में एक सिपाही बन कर रह सकते हैं।

पौलुस ने रोम में मसीहियों से बोला था, ''क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?'' बपतिस्मा पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अंदर गाड़े जाना है (प्रेरितों 2:38; 22:16), और हमें इस बात की अनुमति देता है, कि हम मसीह और उसकी देह अर्थात् उसकी कलीसिया के अंदर प्रवेश कर सकें (1 कुरिन्थियों 12:12-13)।

गलतियां नामक स्थान पर लोगों से यह बोला गया था, ''और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलतियों 3:27)। पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया था, कि ''अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब यीशु मसीह में एक हो'' (गलतियों 3:28)।

मसीह के अंदर बपतिस्मा लेने से पहले हमारा यीशु पर मज़बूत विश्वास होना चाहिए (इब्रानियों 11:6), हमें अपने पापों से मन फिराने की आवश्यकता है (प्रेरितों 17:30-31), और फिर सबके सामने हमें इस बात का अंगीकार करने की आवश्यकता है, कि यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 10:32-33; रोमियों 10:9-10)।

केवल यही एक रास्ता है जिसके द्वारा हम यीशु की सेना में शामिल हो सकते हैं (याकूब 5:4)।

जो कोई मसीह में एक विश्वासी बना रहता है उसके पास सारी आत्मिक आशीषें होती है (इफिसियों 1:3)। यह आशीषें आत्मा के द्वारा हमें मिलती है जब हम परमेश्वर की इच्छा के सामने अपना आत्मसमर्पण करते हैं (रोमियों 12:2)। इन आशीषों में शामिल है:

उद्धार (2 तीमुथियुस 2:10): ''इस कारण मैं चुने हुए लोगों के लिये सब कुछ सहता हूं, कि वे भी उस उद्धार को जो मसीह यीशु में है अनंत महिमा के साथ पाएं।''

छुटकारा (रोमियों 3:23-24): ''इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, परन्तु उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं।''

क्षमा (इफिसियों 1:7): ''हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात्

अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।''

अनंत जीवन (1 यूहन्ना 5:11): ''और वह गवाही यह है कि परमेश्वर ने हमें अनंत जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है।''

भरपूरी (कुलुस्सियों 2:10): ''और तुम उसी में भरपूर हो गए हो जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणी है।''

कोई दण्ड नहीं (रोमियों 8:1): ''अत: अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं, क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं।''

इस बात को ध्यान में रखते हुए कि प्रभु की सेवा में शामिल होने के लिये हमारे लिये कौन-कौन सी बातें ज़रूरी हैं, क्या आपने सुसमाचार के बारे में सुना है? (1 कुरिन्थियों 15:1-4), क्या आपने इस पर विश्वास किया है? (रोमियों 1:16), क्या आपने अपने पापों से मन फिराया है? (लूका 13:3, 5), क्या आपने सबके सामने इस बात का अंगीकार किया है, कि यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है? (मत्ती 10:32-33), और क्या आपने मसीह में बपतिस्मा लिया है? (रोमियों 6:3-5)। अगर नहीं, तो क्या अब यह समय नहीं है कि आप अपना कदम आगे बढ़ाएं, और प्रभु की सेना में शामिल हो जाएं? यीशु ने क्रूस पर आपके लिये जान दी (इब्रानियों 2:9)। प्रभु आपको बुलाता है, कि आप उसकी सेना में शामिल हो जायें, ताकि शैतान के खिलाफ मिलकर इस युद्ध को लड़ा जा सके (मत्ती 11:28-30)। क्या आप इस बुलाहट का उत्तर देंगें?

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

एक वस्तु जिसे हम सच्चाई कहते हैं

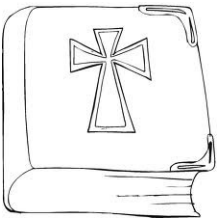

''वरन् परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे'' (रोमियों 3:4)।

''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

''कथा-साहित्य की तुलना में सच्चाई अजनबी सी चीज़ लगती है,'' यह किसी ज़माने की प्रसिद्ध कहावत है जो आज भी कई लोगों पर सही बैठती हैं। अधिकांश लोगों के लिये परमेश्वर के वचन की सच्चाई न तो कभी सुनी गई, न किसी ने उसको सीखा, न उस पर विश्वास किया, और न उसको माना। परन्तु सच्चाई एक वास्तविकता है अर्थात्, सत्य और स्थिर है। हर एक बात की एक सच्चाई है। नास्तिक अर्थात् परमेश्वर पर विश्वास न करनेवाले लोगों का ऐसा मानना है, कि परमेश्वर के अस्तित्व के बारे में हम कुछ नहीं जानते। इन लोगों के अनुसार परमेश्वर के संबंध में यह बात सत्य और सच है। आज कल जिसको जो पसंद है वही बात उसके लिये सच है।

लेकिन बाइबल हमें बताती है, कि परमेश्वर का वचन सत्य है, और केवल इसी सत्य से मनुष्य पाप और मृत्यु से आज़ादी प्राप्त कर सकता है। (यूहन्ना 17:17; यूहन्ना 8:31-32)।

सच्चाई वो है जो वास्तव में घटती है अर्थात् सच्चाई कथा-साहित्य के विपरीत है। यद्यपि, आप और मैं ज़िन्दगी में घटित किसी घटना से असहमत हो, परन्तु जो घटना वास्तव में घटी है उसकी वास्तविकता या सच्चाई पर मेरे और आपके विचार कोई मान्य नहीं रखते। ऐसी संभावना हो सकती है कि दो कार चालकों की कार दुर्घटनाग्रस्त हो जाए। दोनों कार चालक इस दुर्घटना के बारे में अलग-अलग कारण बता सकते हैं, परन्तु कोई भी कारण इस बात को

नहीं बदल सकता जो वास्तव में घटना घटी है।

परमेश्वर के वचन के द्वारा, वो वचन जिसने हज़ारों साल तक अपने आप को कायम रखा, मनुष्य इस वचन के द्वारा सत्य को जान सकता है- वो सत्य जो उद्धार के बारे में है, वो सत्य जो कलीसिया के बारे में है, वो सत्य जो उपासना के बारे में है, और वो सत्य जो धर्मी जीवन के बारे में है। परन्तु इन सच्चाईयों के बारे में हम कैसे जान सकते हैं? निरन्तर परमेश्वर के वचन में बने रहकर हम इन सच्चाईयों को जान सकते हैं (यूहन्ना 8:31-32)। यीशु मार्ग, सच्चाई, और जीवन है (यूहन्ना 14:6)। तथा बिना यीशु के नाम के द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता (कुलुस्सियों 3:17)।

परमेश्वर ने यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया, और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया जो उसकी देह है (इफिसियों 1:22-23; कुलुस्सियों 1:18)। कोई भी मनुष्य इस बात का दावा नहीं कर सकता कि वह कलीसिया का सिर है। यीशु मसीह के अलावा मनुष्यजाति में से कोई भी मनुष्य और परमेश्वर के बीच में बिचवई नहीं बन सकता। (1 तीमुथियुस 2:5)। यीशु को इसलिये भेजा गया ताकि वह संसार में सच्चाई ला सके। अपने पुनरुथान के बाद उसने पवित्र आत्मा को इस कार्य को पूरा करने के लिये भेजा (यूहन्ना 16:13)। पवित्र आत्मा के द्वारा (यूहन्ना 14:26), यीशु ने हमें सत्य के वचन को दिया (इब्रानियों 4:12), और परमेश्वर के इस वचन के द्वारा हम अपनी आत्माओं को बचा सकते हैं (याकूब 1:21-25)।

परमेश्वर के वचन को जब अच्छे और सच्चे हृदय स्वीकार करते हैं, तब हम इस बात को देखते हैं, कि परमेश्वर का वचन बहुत से कार्य करता है:

1. यह मनुष्य को पाप का दोषी ठहराता है (प्रेरितों 2:37 और 2 कुरिन्थियों 7:10), और उन लोगों के हृदयों में भक्ति का शोक उत्पन्न करता है जो लोग परमेश्वर की व्यवस्था अर्थात् उसके नए नियम का विरोध करते हैं।

2. यह मनुष्यों का मन परिवर्तन करता है। मन फिराने और अंगीकार के द्वारा यह मनुष्यों के जीवन में बदलाव और नई दिशा उत्पन्न करता हैं (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 3:19; रोमियों 10:9-10)।

3. यह आत्मा को शुद्ध करता है (1 पतरस 1:22-25), और इस बात में मदद करता है कि मनुष्य नये सिरे से जन्म ले-नाशवान बीज से नहीं परन्तु अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा।

4. यह हमारी आत्मा को बचाता है (याकूब 1:21)। यीशु के लहू में हमारे पापों को धो कर यह हमारी आत्मा को शुद्ध और साफ़ करता है (प्रेरितों 22:16; कुलुस्सियों 1:13, 14)।

सच्चाई, यानि परमेश्वर के वचन का प्रचार हमें हमेशा करना चाहिए (2 तीमुथियुस 4:1-4)। इसे पाप को डांटने और फटकारने के लिये इस्तेमाल करना चाहिए। इसे मनुष्यों को समझाने और सुधारने के लिये इस्तेमाल करना चाहिए। परमेश्वर का वचन मनुष्यों को कठिन मार्ग और सकेत फाटक की ओर मोड़ता है जो जीवन को पहुंचाता है। (मत्ती 7:13-14)।

सच्चाई कभी बदलती नहीं। यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक-सा है (इब्रानियों 13:8)। जैसे कि पतरस ने 1 पतरस 1:25 में घोषणा की थी, कि ''प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है, और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।'' हमारे लिये आज सच्चाई है यीशु मसीह का नए नियम का सुसमाचार-उसकी अन्तिम वाचा और नियम है (इब्रानियों 9:15-17)। जब यीशु मरा, तब वह नए नियम का बांधनेवाला बन गया। उसका लहू दो दिशा में बटा था- पीछे की तरफ (उन सभी लोगों के लिये जिन्होंने क्रूस से पहले परमेश्वर की सेवा की थी), और आगे की तरफ (उन सभी लोगों के लिये जो क्रूस के समय से ले कर समय के अंत तक परमेश्वर की इच्छा को पूरा करेंगे)। बिना लहू बहाए पापों की कोई क्षमा नहीं, और बैलों और बकरों का लहू कभी भी पापों को दूर नहीं कर सकते। इसी कारण यीशु परमेश्वर के लिये एक बलिदान वाला मेमना बन गया था ताकि वह संसार के पापों को दूर कर सके।

यीशु के सुसमाचार में शामिल है:

1. **सुसमाचार के तथ्यों पर विश्वास करना** (यीशु के मारे जाने, गाड़े जाने, और जी उठने के तथ्यों पर) (1 कुरिन्थियों 15:1-4)।
2. **आज्ञाओं को मानना** (यूहन्ना 14:15; प्रकाशितवाक्य 22:14)।
3. **प्रतिज्ञाओं को प्राप्त करना** (2 पतरस 1:3-4): ''बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं।''

4. **झूठे शिक्षकों के खिलाफ़ चेतावनियां** (1 तीमुथियुस 4:1-4; 1 यूहन्ना 4:1-2; मरकुस 7:7; कुलुस्सियों 2:8)।

इन सब की रोशनी में, हमें क्या करने की आवश्यकता है? हमें आवश्यकता है:

1. **सच्चाई को सुनना** (रोमियों 10:17)। यह विश्वास को उत्पन्न करेगी (रोमियों 10:17; याकूब 2:24)।
2. **सच्चाई पर विश्वास करना** (यूहन्ना 8:24; इब्रानियों 11:6)।
3. **सच्चाई को मानना** (इब्रानियों 5:8-9; प्रकाशितवाक्य 22:14)।
4. **सच्चाई के सहारे जीना और उससे प्रेम करना।** परमेश्वर ने स्पष्ट किया: ''सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गंधक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है।'' (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

प्रेरित यूहन्ना का सबसे बड़ा आनन्द इस बात से था, कि विश्वासी लोग सच्चाई में चल रहे हैं (2 यूहन्ना और 3 यूहन्ना)।

दोस्तों! सच्चाई को पकड़े रहो। सच्चाई को खरीदो पर उसे बेचो नहीं। पूरी ईमानदारी से सच्चाई की रखवाली करो। (यहूदा 3)। पूरा यत्न करो। हमेशा उसके लिये खड़े रहो। कभी भी सच्चाई का हाथ नहीं छोड़ना, न इसका विरोध करना, न इससे आगे जाना, और न इससे पीछे रहना। परमेश्वर की इच्छा को सिद्ध करना (रोमियों 12:2)। इस तरह से हम स्वर्ग में प्रवेश कर सकते हैं (मत्ती 7:21)। परमेश्वर का वचन सत्य है। इसे कभी नहीं भूलें!

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

क्या आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये गए हैं?

''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।'' (गलतियों 2:20)।

गलतियों की कलीसियाओं को लिखते हुए पौलुस बड़े निश्चित रूप से कहता है, कि वह मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया!

इससे उसका क्या मतलब था? निश्चित रूप से पौलुस शारीरिक क्रूस की मृत्यु के बारे में बात नहीं कर रहा था, यद्यपि उसने सुसमाचार के प्रचार के लिये काफ़ी दुख सहा था। कई बार उसे जेल में डाला गया, कई बार उस पर कोड़े बरसाए गए जिसकी वह गिनती भी नहीं कर सकता था, एक बार उस पर पथराव भी किया गया था और उसे मरने के लिये छोड़ दिया गया था, और तीन बार समुद्र पर यात्रा करते समय उसका जहाज़ टूट गया था। लेकिन इन सब जोख़िमों के बावजूद भी ऐसा मानना है, कि पौलुस का सिर रोम में कटवा दिया गया था न कि उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, यद्यपि हमारे पास उसकी मृत्यु के बारे में कोई असली तस्वीर नहीं है।

जब पौलुस ने क्रूस पर मसीह के साथ अपने चढ़ाये जाने की बात की थी तो वह निश्चित रूप से चित्रात्मक भाषा का प्रयोग कर रहा था। यह चित्रात्मक

रूप से क्रूस पर चढ़ाया जाना केवल पौलुस ने ही नहीं पाया जब उससे बोला गया था कि ''उठ बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16), परन्तु हर एक वो मनुष्य जिसका मसीह में बपतिस्मा हुआ है (रोमियों 6:3-7; गलतियों 3:27) वह आत्मिक दृष्टिकोण से मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया जाता है।

बपतिस्मे की क्रिया को रोम में मसीही लोगों को समझाते हुए पौलुस इस बात को दिखाता है, कि ''यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व **उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया** ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, और हम आगे को पाप के दासतव में न रहें'' (रोमियों 6:5-6)।

यह कथन बपतिस्मे की ओर संकेत करता है: इस पद में बपतिस्मे को क्रूस पर चढ़ाये जाने की समानता में देखा गया है। पौलुस बपतिस्मे के विषय पर अपनी व्याख्या को आयत 3 और 4 में लिखते हुए कहता है, कि ''**हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया**''... ''अत: उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।''

मसीह का खतना

जिस प्रकार से पौलुस ने रोमियों की पत्री में बपतिस्मे की समानता क्रूस पर चढ़ाये जाने से दिखाई है, उसी प्रकार से उसने कुलुस्सियों की पत्री में बपतिस्मे की समानता मसीह के खतने से बताई है। कुलुस्सियों 2:11-13 के ऊपर ध्यान दें, ''उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है जो हाथ से नहीं होता, अर्थात् मसीह का खतना, जिससे शारीरिक देह उतार दी जाती है।''

कैसे, पौलुस?

''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी में परमेश्वर की सामर्थ्य पर विश्वास करके, जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। उसने तुम्हें भी जो अपने अपराधों और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया'' (कुलुस्सियों 2:12-13)। इस कारण हम देखते हैं, कि नया नियम इस बात को

लेकर काफ़ी स्पष्ट है कि बपतिस्मा एक महत्वपूर्ण क्रिया है। जब कोई मनुष्य मसीह में बपतिस्मा लेता है तो उसके पाप धोये या साफ़ किये जाते है। बपतिस्मे के समय वह अपने पुराने मनुष्यत्व को उतार डालता हैं और नए मनुष्यत्व को पहन लेता हैं। गलतियों 3:27 में लिखा है कि ''और तुम में से जितनों ने **मसीह में** बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।'' बपतिस्मा लेने से पहले हमें यीशु पर विश्वास लाने की आवश्यकता है (मरकुस 16:16), इसके बाद हमें अपने पापों से मन फिराने की आवश्यकता है (प्रेरितों 2:38 और 3:19), और फिर हमें सबके सामने उसके नाम का अंगीकार करने की आवश्यकता है (प्रेरितों 8:37 और रोमियों 10:10)- यह सारी बातें उद्धार प्राप्त करने के लिये आवश्यक हैं, जबकि बपतिस्मा एक अंतिम क्रिया है, जो हमें मसीह की आत्मिक देह में मिला देता हैं (1 कुरिन्थियों 12:12-13)। इसी कारण पतरस ने ''चुने हुओं'' से परमेश्वर पिता के भविष्य ज्ञान के अनुसार यह कहा कि ''बपतिस्मा, **यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा,** अब **तुम्हें बचाता है**'' (इससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है (1 पतरस 3:21)।

सच्चाई अभी भी मज़बूती से खड़ी हुई है

पिछले कई गुज़रे सालों में, मसीहीयत से जुड़े कई धार्मिक गुट जैसे कैथोलिक और प्रोटैस्टन्ट-इन दोनों ने अपनी शिक्षाओं में ऐसी कोशिश की हैं, कि वह बपतिस्मे के अर्थ और उद्देश्य को छोटा बता सके अर्थात् उसके महत्त्व को घटा सके। हम देखते है कि बपतिस्मे के अर्थ और उद्देश्य को बदलने के लिये सबसे पहला कदम कैथोलिक गुट ने आगे बढ़ाया। इन्होंने बपतिस्मे को जो कि पानी के अंदर गाड़े जाना है, बदलकर बपतिस्मे का अर्थ छिड़काव और उड़ेलना कर दिया अर्थात् उन्होंने इसका अर्थ ही बदल दिया है। इन्होंने बपतिस्मे को बीमारों के लिये ''इलाज'' का बपतिस्मा बताया है। इसके बाद वह छोटे बच्चों के बपतिस्मे की शिक्षा को लाये, परन्तु बच्चे पापी नहीं है क्योंकि वे ज़िम्मेदार व्यक्ति नहीं हैं (वे अपने निर्णय खुद नहीं ले सकते)। बाद में जब कैथोलिक गुट में से निकलकर प्रोटेस्टन्ट गुट आये तो न केवल उन्होंने बपतिस्मे के तरीके को नजरअंदाज कर दिया, परन्तु उन्होंने यह भी तय किया कि वास्तव में बपतिस्मा लेना इतना ज़रूरी नहीं है। इसी से शुरू हुई एक और झूठी शिक्षा जो लूथर और कालविन की शिक्षाओं पर आधारित है। यह शिक्षा है- ''केवल विश्वास के द्वारा'' उद्धार प्राप्त करना।

हमें पीछे जाने की ज़रूरत हैं

विश्वास में और परमेश्वर और उसके वचन के प्रति आज्ञाकारी रहकर, हमें ज़रूरत है कि हम उद्धार, कलीसिया, स्वीकारयोग्य उपासना, और मसीही जीवन की शिक्षा के बारे में जानने और सिखाने के लिये वचन के पास वापस लौटें। ऐसा करके हम इस बात को जान पाएंगे, कि बपतिस्मा एक महत्त्वपूर्ण आज्ञा है (मत्ती 28:18-19; मरकुस 16:16; और प्रेरितों 2:38)। हम इस बात को भी पाते हैं, कि बपतिस्मा एक क्रिया है जो हमें मसीह के अंदर प्रवेश करा देती हैं, जहां पर हम उसकी मृत्यु, गाड़े जाने, और जी उठने के हिस्सेदार बन जाते हैं, और ''हमें मरे हुओं में से जिलाया गया है ताकि हम ''नए जीवन की सी चाल चलें'' (रोमियों 6:3-5)। मसीह का खतना, यहूदियों की पुराने नियम की व्यवस्था जिसकी शुरूआत अब्राहम से हुई, नहीं है, परन्तु मसीह का खतना वो है जब एक पापी मनुष्य अपने **पापों की क्षमा** प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेता है, जिस प्रकार से पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन लोगों से बपतिस्मा लेने को कहा था (प्रेरितों 2:38), और हम देखते हैं कि 3000 लोगों ने ''जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया **बपतिस्मा लिया** था'' (प्रेरितों 2:41)।

क्या आप मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाये गए हैं?

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398
नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

परमेश्वर के वारिस

''आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की संतान हैं; और यदि संतान हैं तो वारिस भी, वरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जब हम उसके साथ दुख उठाएं तो उसके साथ महिमा भी पाएं'' (रोमियों 8:16-17)।

मसीही लोग ''परमेश्वर के वारिस'' हैं

प्रेरित पौलुस को सुसमाचार स्वयं यीशु मसीह के प्रकाशन से मिला था (गलतियों 1:12)। पौलुस परमेश्वर के पवित्र आत्मा से निर्देशित होते हुए रोम में रहनेवाले मसीहीयों को सूचित करता हैं, कि ना केवल वे परमेश्वर के वारिस हैं, परन्तु मसीह के संगी वारिस भी हैं!

इस बात को मसीहीयों को समझाने के लिये प्रेरित पतरस कहता है, कि उनके पास एक विरासत है जो अविनाशी तथा निर्मल है और लुप्त नहीं होती, और यह उनके लिये स्वर्ग में रखी हैं (1 पतरस 1:4)। मित्रों, ज़रा कल्पना करें! एक ऐसी विरासत, जो कभी नाश नहीं होगी, और स्वयं स्वर्ग में हमारे लिये आरक्षित है!

परन्तु कैसे?

परमेश्वर का वारिस होने के लिये एक व्यक्ति को परमेश्वर की सन्तान होना आवश्यक है और इसलिये उसे परमेश्वर के परिवार का सदस्य होना चाहिए। इस कार्य को पूरा करने के लिये मनुष्य को स्वर्गीय पिता के परिवार में जो कि

उसकी कलीसिया है, नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता है। और जिसके विषय में 1 पतरस 1:23 में प्रेरित पतरस लिखते हुए कहता है, कि ''तुमने नाशवान नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है।''

यह ''जल और आत्मा'' का जन्म है जिसके बारे में यीशु ने नीकुदेमुस को यूहन्ना 3:3 और यूहन्ना 3:5 में बताया था। यह बहुत ज़रूरी है कि मनुष्य जल और आत्मा से जन्म ले इससे पहले की वह परमेश्वर के राज्य को देख पाये। गलतियों के नाम अपने पत्र में पौलुस हमें बताता है, कि ''हम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर हैं परमेश्वर की सन्तान हैं- और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।''

इसलिये आपको जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। इसमें ''न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो- **और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो**'' (गलतियों 3:26-29)।

इस विश्वास को हम किस तरह से प्राप्त कर सकते हैं?

हम देखते हैं कि रोम में रहनेवाले मसीही लोग परमेश्वर के प्रति काफ़ी समर्पित और विश्वासी थे। इसलिये हम पढ़ते हैं कि पौलुस रोम में रहनेवाले मसीहीयों को लिखते हुए कहता है, कि ''तुम्हारे विश्वास की चर्चा सारे जगत में हो रही है'' (रोमियों 1:8)।

पौलुस ने एक काफ़ी लंबा पत्र रोम में रहनेवाले मसीहीयों को लिखा था, और उसने उन्हें याद दिलाया था (रोमियों 10:17), कि किस तरह से उन्होंने अपने विश्वास को पाया, ''विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है''-जिस तरह से पतरस ने उनके नए जन्म के बारे में यह घोषणा की थी, कि वह परमेश्वर के वचन पर निर्भर करता है, वो वचन, अर्थात् सुसमाचार जो युगानुयुग स्थिर रहता है (1 पतरस 1:25)।

उन्हें सुनने की आवश्यकता हैं, परमेश्वर का वचन सुनने की आवश्यकता हैं, और मसीह की शिक्षा को सीखने की आवश्यकता हैं। वे कभी भी मनुष्यों की बनाई गई शिक्षाओं और रीतियों पर निर्भर नहीं कर सकते। ''ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की आज्ञाओं को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं'' (मरकुस 7:7-9)। शिक्षा जो पर्याप्त या काफ़ी है वो है परमेश्वर का नया नियम- ''स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था (इब्रानियों 9:15-17; याकूब 1:21-25)। इसे पूरी विनम्रता से लेना चाहिए, और इस बात में कोई संदेह नहीं, कि यह

न केवल हमारी आत्माओं को बचा सकता है, परन्तु निश्चित रूप से यह हमारी आत्माओं को बचाएगा।

परन्तु इस विश्वास को यीशु की आज्ञा मानने की आवश्यकता है

यह विरासत जिसे हम खोजते हैं, इसे पहले हमें तब दिया जाता हैं जब हम अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मा लेते हैं और पवित्र आत्मा का दान पाते हैं, जो बहुत हद तक हमारी विरासत हैं (इफिसियों 1:14 में इसका वर्णन दिया गया हैं)। ''मसीह में'' बपतिस्मा लेने के लिये (रोमियों 6:3-5 और गलतियों 3:27), मनुष्य को अपने पापों से मन फिराने की आवश्यकता है, और सबके सामने यीशु के नाम का अंगीकार करने की आवश्यकता है (मत्ती 10:32-33)-जिस तरह से खोजे ने प्रेरितों 8:35-38 में किया था। जैसे ही फिलिप्पुस ने यीशु का प्रचार खोजे को किया, प्रचार सुनने के बाद खोजा परमेश्वर के परिवार में अर्थात् प्रभु की कलीसिया में शामिल होने के लिये बपतिस्मा लेने के लिये तैयार हो गया, **परन्तु बपतिस्मे से पहले अपने पापों से मन फिराना, और फिर यीशु के नाम का सबके सामने अंगीकार करना ज़रूरी है।** इसलिये खोजा फिलिप्पुस से कहता है, ''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है''। खोजे के इस विश्वास पर तुरन्त फिलिप्पुस ने उसे मसीह में, जल के अन्दर, बपतिस्मा दिया। इसके बाद हम देखते हैं, कि यह ''परमेश्वर का वारिस'' अर्थात् खोजा आनन्द करता हुआ अपने मार्ग पर चला गया।

परमेश्वर का वारिस होने के नाते मैं निरन्तर उसकी इच्छा के आधीन हूं

इससे पहले की कोई वसीयत की वस्तुओं अर्थात् शर्तों को जानने और समझने की कोशिश करें, वसीयत का पढ़ा जाना एक सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। हमारे लिये आज परमेश्वर की इच्छा मसीह का नया नियम हैं (इब्रानियों 9:15-17)। यीशु उस वसीयत का लेखक और बिचवई है।

यह वसीयत और परमेश्वर की इच्छा आज भी पूरी तरह से एक समान है, क्योंकि यीशु परमेश्वर की इच्छा पूरी करने आया था (इब्रानियों 10:7; 9-10)। उसने उस वसीयत पर अपने लहू से मुहर लगा दी है, और ऐसा करके वह उन लोगों के लिये जो परमेश्वर के परिवार का हिस्सा होंगे, छुटकारा और पापों की क्षमा लाया (कुलुस्सियों 1:13-14 और इफिसियों 1:7)।

अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने इस बात को स्पष्ट रखा था, कि ''जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही **जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है**'' (मत्ती 7:21)। यह इच्छा या नियम-परमेश्वर के परिवार में होने के लिये आवश्यक है। केवल जल और आत्मा से नया जीवन लेने की ज़रूरत तो है, परन्तु परमेश्वर के प्रति अन्त तक विश्वासी रहने की भी आवश्यकता है।

परमेश्वर का चुना हुआ बर्तन इस बात को स्पष्ट करता है

जवान प्रचारक तीतुस के नाम जो विश्वास की सहभागिता के विचार से पौलुस का सच्चा पुत्र है, उसे प्रोत्साहन के यह शब्द दिये गये हैं:

''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चेतावनी देता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं; और **उस धन्य आशा की** अर्थात् अपने महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें। जिस ने अपने आप को हमारे लिये दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले, और शुद्ध करके अपने लिये एक ऐसी जाति बना ले जो भले-भले कामों में सरगर्म हो'' (तीतुस 2:11-14)।

क्या आप परमेश्वर के वारिस हैं?

आप परमेश्वर के वारिस बन सकते हैं।

परमेश्वर का वारिस बनने के लिये आपको उसकी इच्छा पर चलना है और उसके नियमों का पालन करने की आवश्यकता हैं।

तो क्या आप परमेश्वर के वारिस बनने के लिये तैयार हैं?

फ्रैड ऐल. डिलन

FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड

चर्च ऑफ़ क्राईस्ट

पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019

ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in

बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

प्रभु की महिमानवित कलीसिया

“हे पतियो अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया; कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन् पवित्र और निर्दोष हो” (इफिसियों 5:25-27)।

पतियों को अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखना चाहिए। पत्नियो को अपने-अपने पति के अधीन रहना चाहिए जैसे “प्रभु या मसीह के अधीन हो” (इफिसियों 5:22)।

जब इन दो आज्ञाओं का ईमानदारी से पालन होता है, तब शादी जैसा ख़ूबसूरत रिश्ता स्थायी रहता है। पौलुस के इस ख़त में जो कि उस ने इफिसुस मे रहनेवाले अपने पवित्र और विश्वासी भाईयों के नाम लिखा था, हम शादी जैसे ख़ूबसूरत रिश्ते के बारे में बड़ी ही अच्छी तरह से वर्णन पाते हैं। पौलुस ने अपने ख़त में इस आदर्श संयोजन का वर्णन इसलिये किया था ताकि वह मसीह (प्रभु) और उसकी अपनी दुल्हन (कलीसिया - एक आत्मिक दूल्हन अन्यथा मसीह की देह) के बीच की रिश्तेदारी को ख़ूबसूरती से बता सके। यीशु ने ''जल के स्नान से'' (बपतिस्मा) और ''वचन के द्वारा'' अपनी कलीसिया को पवित्र, शुद्ध, और साफ़ किया है। परमेश्वर के पवित्र-आत्मा के द्वारा इस महिमानवित कलीसिया को मनुष्यों को दिया गया है। ऐसा करके परमेश्वर ने स्वयं को “एक महिमानवित कलीसिया” दी, जिस में न कोई कलंक, न झुर्री, और न किसी प्रकार की कोई वस्तु है, - एक ऐसी कलीसिया जो “पवित्र और निर्दोष है।”

क्या आप ऐसी किसी कलीसिया को जानते हैं?

क्यों यह कलीसिया महिमानवित है? आइये कुछ कारणों को हम देखें:

1. क्योंकि मसीह ने स्वयं इसको बनाने का वादा किया था (मत्ती 16:16-18)।
2. क्योंकि यीशु मसीह ने इसे अपने बेशक़ीमती लोहू से खरीदा है (प्रेरितों 20:28)।
3. क्योंकि प्रभु स्वयं उद्धार पाए हुए लोगों को इस में मिलाता है (प्रेरितों 2:47)।
4. क्योंकि प्रभु ने अपने लोहू के द्वारा इसे शुद्ध और साफ़ किया है (कुलुस्सियों 1:13-14)।
5. क्योंकि यीशु मसीह स्वयं इसकी एकमात्र नींव है (1 कुरिन्थियों 3:11)।
6. क्योंकि यह महिमानवित नाम पहनती है। (फिलिप्पियों 2:9-11; प्रेरितों 4:12)।
7. क्योंकि मसीह स्वयं अपनी कलीसिया का एकमात्र उद्धारकर्ता है (इफिसियों 5:23)।
9. क्योंकि इसकी योजना पिता-परमेश्वर ने बनाई थी (इफिसियों 3:10-11)।
10. क्योंकि परमेश्वर का पवित्र-आत्मा इसका अध्यापक और मार्गदर्शक है (यूहन्ना 16:13; यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 15:26)।
11. क्योंकि इसके पास सिद्ध व्यवस्था है अर्थात यीशु मसीह का नया नियम (याकूब 1:25; इब्रानियों 9:15-17)।
12. क्योंकि यह एक ऐसा राज्य है जो कभी नाश नहीं होगा (मत्ती 16:19; दानिय्येल 2:44-45)।
13. क्योंकि इसमें एक सबसे सामर्थपूर्ण पाठ है जो कि सारी मनुष्यजाति को दिया गया है (रोमियों 1:16; मरकुस 16:15-16)।
14. क्योंकि कई मसीहीयों ने बिना किसी हिचकिचाहट के इसकी सीमाओं को बढ़ाने के लिये अपने घरों और जीवनों का बलिदान दे दिया था (प्रेरितों 8:1; प्रेरितो 9:1)।

जब हम उन वादों, योजनाओं, और उस दाम के बारे में सोचते है जो कि पूरी तरह से चुकाया गया था, तब हम आश्चर्य करते हैं कि किस तरह से हम

उसकी आत्मिक देह के सदस्य होने के योग्य हैं। हमें इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि कलीसिया स्वयं परमेश्वर द्वारा दी गई है, और इसी देह के अन्दर रहकर हमें सभी आत्मिक आशीषें प्राप्त हो सकती हैं (इफिसियों 1:3)।

किन्तु, किस तरह से हम परमेश्वरत्व से दी गई आशीषों का लाभ उठा सकते हैं? सबसे पहिले मनुष्य को बिना किसी हिचकिचाहट के सुनने और सीखने की आवश्यकता है। (रोमियों 10:17; यूहन्ना 6:45)। दूसरा, विश्वास के द्वारा पाप के दोषी ठहराए जाने पर मनुष्य को अपने पापों से मन फिराने की आवश्यकता है (प्रेरितों 2:38; प्रेरितों 3:19)। परमेश्वर के सामने बड़ी नम्रता के साथ अब कोई भी मनुष्य इस बात का अंगीकार कर सकता है, कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है और जीवन का प्रभु है (मत्ती 10:32; रोमियों 10:9-10)। मसीह की देह यानि मसीह की कलीसिया में (रोमियों 16:16) बपतिस्मे के द्वारा ही प्रवेश किया जा सकता है (रोमियों 6:3-4; गलतियों 3:27; 1 कुरिन्थियों 12:12-13)। बपतिस्मे के द्वारा पानी के अंदर गाड़े जाने का अर्थ है, "मसीह के साथ गाड़े जाना" (कुलुस्सियों 2:12-13)। अब कोई भी व्यक्ति ''नए जीवन की सी चाल चलने के लिये जिलाया जा सकता है" (रोमियों 6:3-5; कुलुस्सियों 2:12-13)। इस प्रकार से कोई भी "परमेश्वर का वारिस" और "मसीह के साथ वारिस" बन सकता है (रोमियों 8:16-17)। हम जब बपतिस्मा ले लेते हैं, तब हम "इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार उसके वारिस बन जाते हैं" (गलतियों 3:26-29)। मनुष्य को यह जानने की आवश्यकता है, कि मसीह की केवल एक ही कलीसिया है और यह उसकी महिमानवित कलीसिया - उसकी देह - उसका राज्य - परमेश्वर का घराना है।

जब मसीहीयों में आपस में असहमति और विभाजन होता है, तब वे मसीह की देह में दरार डाल देते हैं। जब वे कहते हैं कि "मैं पौलुस का हूं," मैं अपुल्लोस का हूं'' "मैं कैफा का हूं" वे मसीह की देह का बटवारा कर देते हैं (1 कुरिन्थियों 1:10-13)। यह बड़ा ही ख़तरनाक और पाप से भरा हुआ कार्य है। इस कार्य से न्यायासन के दिन बहुत से लोग दोषी ठहराए जाएंगे। परमेश्वर अपने वचन में बड़ी ही स्पष्टता से बताता है, कि "मेल के बन्ध में आत्मा की **एकता** रखने का यत्न करो," और उसका वचन हमें इस बात की भी सलाह देता है, कि **"एक ही देह है, और एक ही आत्मा; जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे, अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है; एक ही प्रभु है,**

एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है" (इफिसियों 4:3-6)।

जब मनुष्य अपने फ़लसफ़ों, शिक्षाओं, और अपनी रीतियों से लोगों में बटवारा और गड़बड़ी पैदा करता है, तब वे सुननेवालों को परमेश्वर की सच्ची शिक्षा से दूर ले जाता हैं (कुलुस्सियों 2:8) और वे ''व्यर्थ में उपासना'' करते हैं (मरकुस 7:7-9)।

हमें यह बात सीखने की आवश्यकता है, कि हम मसीह की शिक्षा और नए नियम में उसके चेलों की शिक्षा को आदर दें - न इस में कुछ बढ़ाए, न इस में से कुछ निकालें, यानि परमेश्वर के वचन को न बदलें (प्रकाशितवाक्य 22:18-19; गलतियों 1:6-10)।

यह कितने गौरव तथा आशिष की बात है, कि हम मसीह की कलीसिया के सदस्य है, अर्थात् एक ऐसी कलीसिया जो मसीह की देह है, उसका राज्य है, और उसका घराना है। इसके साथ-साथ यह कितने आशीष की बात है, कि हम परमेश्वर को अपना पिता, और मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु कह सकते हैं। आइये हम सब यत्न करें, कि हम सच्चाई के प्रति विश्वासी बने रहें, इस बात को याद रखते हुए कि सच्चाई ही हमें आज़ाद कर सकती है (यूहन्ना 8:32)। प्रभु यीशु की बनाई हुई कलीसिया का एक अंग होना, अपने आप में एक बड़ी ही आशिष की बात है।

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

क्या आपके पास उद्धार पाने वाला विश्वास है?

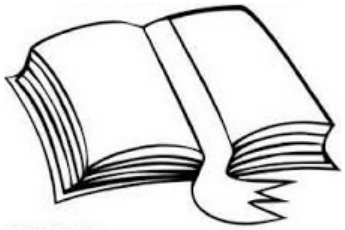

''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों 11:6)।

''कि मैं पहुंचुं तेरे नज़दीक,
हो तेरा रुह मेरा रफ़ीक,
बीच अपनी ऊंची पाक शाह राह,
मुझ को मसीह हमेशा चला।''

यह एक पुराना गीत है जिसका शीर्षक है, ''मैं आगे बढ़ता रोज़-ब-रोज़''

विश्वास के तीन पठार अथवा ऊंची भूमि वाले स्थान: अमरीका के कॉलोरेडो के रॉकी पर्वत के नीचे की छोटी पहाड़ियों में जहां मेरा जन्म हुआ था, काफ़ी पठार पाए जाते हैं। हर साल काफ़ी पर्यटक इन पठारों को देखने आते हैं। यह देखने में काफ़ी सुन्दर होते हैं। पठारों के विषय में हम इस बात को देखते हैं, कि कुछ पठार समुद्रतल से कम ऊंचाई के होते हैं, और कुछ समुद्रतल से इतने ऊंचे होते हैं कि वह पर्वत की ऊंची चोटी तक पहुंच जाते हैं। कुछ पठार ऐसे हैं जो बिल्कुल समतल है अर्थात् एक ऐसा पहाड़ भूमि जो एकसार फैला हुआ है।

जब एक मसीही अपने विश्वास को नापता है, तो वह विश्वास के कई पठारों को अपने सामने पाता है जिसकी शुरूआत परमेश्वर और उसके पुत्र से संबंधित निचले स्तर के विचारों से हुई थी। परन्तु, जैसे-जैसे उसने परमेश्वर के वचन का अध्ययन किया, और परमेश्वर के महान अनुग्रह के पास आया, वो अनुग्रह जो मनुष्य को पाप और मृत्यु से बचाता है, वह अपने विश्वास में रोज़-ब-रोज़ आगे बढ़ता गया अर्थात् ऐसा करके एक मसीही अपने विश्वास में मज़बूती पाता है।

विश्वास को पाना: प्रारंभ में हमें उस विश्वास को पाना चाहिए ''जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। इस विश्वास को हम परमेश्वर के वचन को सुनने से पाते हैं (रोमियों 10:17 पर ध्यान दें)। इससे पहिले कि हमारा विश्वास

आगे बढ़े और उन ऊंचाईयों को छूएं जिसकी हमें आशा है, हमारे अन्दर परमेश्वर के प्रति एक दृढ़ विश्वास होना चाहिए अर्थात् हमारे पास विश्वास होना चाहिए। इस बात को समझाने के लिये कि किस तरह से हम इस विश्वास को पा सकते हैं, परमेश्वर ने इससे हमें अन्ज़ान नहीं रखा है, ''अत: विश्वास सुनने, से और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। इसलिये हम देखते है कि विश्वास हमारे पास तब आता है जब हम उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं। परमेश्वर के वचन बाइबल को हमें रोज़-ब-रोज़ पढ़ना चाहिए तथा उसमें यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि आज हमारे लिये उसकी क्या इच्छा है?

केवल विश्वास: जब हम विश्वास को परमेश्वर के वचन को पढ़कर और उसका अध्ययन करके पा लेते हैं, तब हम इस बात को बखूबी जान पाते है कि विश्वास कितना अनिवार्य है (इब्रानियों 11:6)। विश्वास बिना न तो हम परमेश्वर के पास जा सकते हैं और न ही हम उसे प्रसन्न कर सकते हैं। विश्वास के द्वारा ही हम अपने स्वर्गीय पिता के पास पहुंच सकते हैं। अगर हमारे अन्दर विश्वास की कमी है, तब परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं और विनतियों को अनसुना कर देगा, अर्थात् उन पर ध्यान नहीं देगा (1 पतरस 3:12)।

विश्वास जो कार्यशील है: परन्तु, पवित्रशास्त्र हमें बड़ी ही स्पष्टता से बताता है कि केवल विश्वास द्वारा मनुष्यों के लिये परमेश्वर की उद्धार की योजना अधूरी है। याकूब की पत्री और उसके दूसरे अध्याय में याकूब इस बात पर काफ़ी ज़ोर देता है, कि विश्वास कर्म के बिना मरा हुआ है, अर्थात् विश्वास और कर्म साथ-साथ चलते हैं। विश्वास और कर्म के बारे में याकूब इस प्रकार से कहता है कि ''वैसे ही विश्वास भी, यदि कर्म सहित न हो तो अपने स्वभाव में मरा हुआ है'' (याकूब 2:17)। दूसरी बात जो याकूब विश्वास और कर्म के बारे में कहता है वह यह है: ''पर हे निकम्मे मनुष्य, क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?'' (याकूब 2:20)। और तीसरी बात यह कि ''इस प्रकार तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं, वरन् कर्मों से भी धर्मी ठहरता है'' (याकूब 2:24)।

एक मसीही को यह सीखने की आवश्यकता है कि वह विश्वास के द्वारा चले, विश्वास के द्वारा जीये, और फिर आखिर में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे, परन्तु यह विश्वास एक कर्म करनेवाला या आज्ञाकारी विश्वास होना चाहिए। (इब्रानियों 5:8-9): ''यीशु अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया।''

अगर हमारे अंदर एक कार्यशील और आज्ञाकारी विश्वास है, तब हम मसीह के लिये फल उत्पन्न कर सकते हैं (यूहन्ना 15:1-2; गलतियों 5:22-23)। इस विश्वास के ज़रिए हम पिता की इच्छा को भी पूरा कर सकते हैं।

हमें हमारे विश्वास को कर्म में लगाने की आवश्यकता है (याकूब 1:21-25; याकूब 2:14-24)। अगर हमारे विश्वास में कर्म नहीं है, तो वह एक मरा हुआ

विश्वास है। मसीह में विश्वास को हमारे पापों के लिये परमेश्वर-भक्ति का शोक उत्पन्न करना चाहिए। इस शोक से पश्चाताप उत्पन्न होता है जिसका परिणाम उद्धार है (2 कुरिन्थियों 7:10)। अब हम मसीह के द्वारा जो हमारा बिचवई है, परमेश्वर के पास जा सकते हैं (1 तीमुथियुस 2:5)।

जब विश्वास हमें मन-फिराने के लिये बोलता है, तब हम परमेश्वर की एक और महत्वपूर्ण आज्ञा को मान सकते हैं: सबके सामने इस बात का अंगीकार करना कि यीशु मसीह जीवते परमेश्वर का पुत्र है (मत्ती 10:32-33; रोमियों 10:9-10)।

जब मनुष्य अपने पापों से मन-फिराता है, तब उसके हृदय में उत्साह से भरी हुई ऐसी इच्छा होनी चाहिए कि वह सबके सामने इस अंगीकार को करे, यानि वो अंगीकार जो खोजे ने प्रेरितों 8:37 में किया था: **''मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।''**

कार्यशील विश्वास इस समय नहीं किया जाता। आत्मिक परिणामों को उत्पन्न करने के लिये यह तो अभी एक शुरूआत है। नए नियम में हम देखते हैं कि जिन पुरुषों और महिलाओं ने परमेश्वर के वचन को सुना, उनमें इतना विश्वास उत्पन्न हो गया कि वे अपने पापों से क्षमा प्राप्त करने के लिये बपतिस्मे के द्वारा पानी की कब्र में गाड़े गए (प्रेरितों 2:41; 8:12-13; 8:37-39; 9:18; 10:47-48; 16:15; 16:33; 18:8; और 19:5)। विश्वास के इसी कर्म से हम देखते हैं कि वे मसीह में प्रवेश कर सकें, और वे उसकी देह बन गए अर्थात् वो देह जिसे हम कलीसिया कहते हैं (प्रेरितों 2:47, रोमियों 6:3-5, 1 कुरिन्थियों 12:13, कुलुस्सियों 2:12-13, और गलतियों 3:27-29)।

विश्वास जो हमें उद्धार देता है? यीशु मसीह के बहुमूल्य लहू में हमारे पाप क्षमा (प्रेरितों 2:38) और साफ़ किये जाते हैं (प्रेरितों 22:16)। यीशु मसीह के द्वारा ही हमें छुटकारा और हमारे हर एक पाप की क्षमा प्राप्त होती है (कुलुस्सियों 1:13-14)।

एक पापी का यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और उसके जी उठने में हिस्सा होता है। जिस तरह से यीशु मसीह क्रूस पर हमारे पापों के लिये मारा गया, उसी प्रकार से जब एक पापी मनुष्य यीशु मसीह में बपतिस्मा लेता है तब उसका पुराना मनुष्यत्व पानी की कब्र में दफ़न हो जाता है, और जब वह उस पानी की कब्र में से बाहर निकलता है तो वह एक नया मनुष्य होता है, नए जीवन की सी चाल चलने के लिये। जब एक पापी मनुष्य ऐसा करता है, तो प्रभु स्वयं उसे अपनी कलीसिया में मिला देता है (प्रेरितों 2:38 और कुलुस्सियों 1:13-14)। उसे (पापी मनुष्य को) अन्धकार (शैतान) के वश में से छुड़ाया जाता है, और उसे परमेश्वर के राज्य में (कलीसिया में) प्रवेश कराया जाता है।

क्या इस मोड़ पर विश्वास समाप्त हो जाता है? नहीं, नहीं, नहीं। मसीह में कुछ भी पाने के लिये हमें ज़रूरत है कि हम रोज़-ब-रोज़ मसीह में अपने विश्वास में

आगे बढ़ते चले जाएं। **प्रेम के साथ हमारे विश्वास को कार्य करना चाहिए** (गलतियों 5:6)। बिना प्रेम के हमारे विश्वास में कमी आ जाती है, और हमारे कार्य व्यर्थ हो जाते हैं।

पवित्र आत्मा के द्वारा पौलुस ने हमें चेतावनी दी है, ''पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, **पर इन में सब से बड़ा प्रेम है**'' (1 कुरिन्थियों 13:13)।

अगर मेरा विश्वास प्रेम के साथ कार्य कर रहा है, तब मैं ऊंचे स्थान पर पहुंच सकता हूं, और अंत में पहाड़ी की ऊंची चोटी तक पहुंच सकता हूं। (फ्रैड ऐल. डिलन)।

परमेश्वर की सब से महान आज्ञा है **प्रेम**- सब से पहिले हमारे अंदर परमेश्वर के प्रति प्रेम होना चाहिए, और फिर इसके बाद हमारे अंदर अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम होना चाहिए।

यीशु ने हमें चेतावनी दी थी, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञायों को मानोगे।'' अगर हम पूरे विश्वास और प्रेम के साथ यीशु की आज्ञाओं को मानेंगे, तो हम स्वयं विश्वास की उस पहाड़ी चोटी तक पहुंच पाएंगे जहां पर पहुंच कर हम परमेश्वर की नज़दीकी में रह सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके प्रिय पुत्र यीशु की सुनें, और पूरी ईमानदारी से उसकी बातों को मानें।

अगर आप संपूर्ण रूप से पूरे अपने हृदय, आत्मा, और मन से परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, तब आपके पास एक ऐसा विश्वास होगा जो प्रेम के साथ कार्य करता है। मसीह में अपने विश्वास की इस चोटी तक पहुंचना हमारे लिये बहुत आवश्यक है। परन्तु विश्वास की इस चोटी तक पहुंचना इतना आसान नहीं है। हम सकेत फाटक और सकरे मार्ग से प्रवेश करते हैं, और रास्ता ढ़लान की ओर नहीं है, परन्तु इस रास्ते में चढ़ाई है। जब हम पूरी दृढ़ता के साथ प्रेरितों की शिक्षा, संगति रखने, रोटी तोड़ने या प्रभु भोज, और प्रार्थना करने में बने रहते हैं, तब हम दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ते रहते हैं।

परमेश्वर आपको आशीषित करे जब आप रोज़-ब-रोज़ मसीह में अपने विश्वास में आगे बढ़ते हैं। फ्रैड ऐल. डिलन FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड

चर्च ऑफ़ क्राईस्ट

पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019

ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in

बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

परमेश्वर आपसे क्या चाहता है?

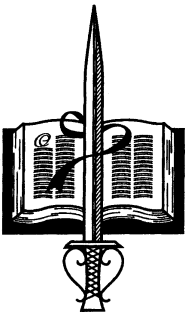

''अब मैं सब से पहले यह आग्रह करता हूं कि बिनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद सब मनुष्यों के लिये किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं। यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता और भाता भी है, जो यह चाहता है कि सब मनुष्यों का उद्धार हो, और वे सत्य को भली भांति पहचान लें'' (1 तीमुथियुस 2:1-4)

परमेश्वर आपसे क्या चाहता है?

प्रेरित पौलुस और प्रेरित पतरस दोनो ने बड़ी ही दृढ़ता से इस सत्य को सामने रखा, कि परमेश्वर चाहता है कि सब लोगों का उद्धार हो। 2 पतरस 3:9 में लेखक इस प्रकार से कहता है कि ''प्रभु तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।''

इसलिये परमेश्वर ने.....

- सब मनुष्यों के ऊपर अपना महान अनुग्रह प्रगट किया है (तीतुस 2:11)।
- पवित्र आत्मा को भेजा ताकि वह हमें सत्य का मार्ग बताए (यूहन्ना 16:13)।
- हमें अपना पवित्रशास्त्र दिया है ताकि हम ''हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाएं'' (2 तीमुथियुस 3:16-17)।
- अपने प्रेरितों को (और उनके द्वारा हमें भी) इस संसार में भेजा ताकि हम सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार का प्रचार कर सकें (मरकुस 16:15-16)।

- ऐसा होने दिया कि उसका एकलौता पुत्र हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे'' (इब्रानियों 2:9)।
- ''हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, उद्धार के निमित्त'' सुसमाचार के द्वारा अपनी सामर्थ को दिया (रोमियों 1:16)।
- हमें जीवन के वृक्ष के पास आने का अधिकार दिया और स्वर्ग के फाटकों में से प्रवेश करने का अधिकार दिया है, परन्तु यह दोनों अधिकार इस बात पर निर्भर करते हैं कि क्या हम परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी है या नहीं? (प्रकाशितवाक्य 22:14)।

परन्तु परमेश्वर इसके बदले में हमसे क्या चाहता है?

- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी बातों को सुनें और सीखें (यूहन्ना 6:45)।
- परमेश्वर चाहता है कि हम इस बात को स्वीकार करें कि हमारा विश्वास उसमें और उसके पुत्र में है (इब्रानियों 11:6 और यूहन्ना 8:24)।
- परमेश्वर चाहता है कि मन परिवर्तन के समय हमारे अंदर एक दृढ़ निश्चय हो ताकि हम यह कह सके कि अब हम अपना जीवन मसीह के लिये जियेंगे, और हमारे अंदर अपने पापों से मन फिराने की एक सच्ची भावना जाग्रत हो सकेगी (प्रेरितों 3:19)।
- परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं का नम्रता से पालन करें (इब्रानियों 5:8-9)।

मैं कैसे जान सकता हूं कि परमेश्वर मुझ से क्या चाहता है?

मैं जान सकता हूं क्योंकि परमेश्वर ने अपनी इच्छाओं को ''स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था'' में प्रगट किया है (याकूब 1:25)। उसने अपने प्रिय पुत्र यीशु को नए नियम का बिचवई बनाकर दिया है (इब्रानियों 9:15-17)। ऐसा करके परमेश्वर ने सारी पीढ़ियों के मनुष्यों के लिये जो उसकी इच्छा के आधीन रहने को तैयार हैं, उन्हें उसने मार्ग, सच्चाई, और जीवन उपलब्ध करवाया है। उसने हमें इस बात की चुनौती दी है कि हम परमेश्वर की भली, भावती, और सिद्ध इच्छा को प्रमाणित करें (रोमियों 12:2)। परमेश्वर चाहता है कि हम उसके शक्तिशाली हाथों के सामने अपने आपको नम्र करें ताकि वह हमें ऊपर उठा सके अर्थात् हमें शिरोमणी बना सके (याकूब 4:10)।

परमेश्वर ने हमें सुसमाचार के बारे में चार वर्णन दिये हैं

मत्ती, मरकुस, लुका, और यूहन्ना की किताबों में, परमेश्वर ने अपने प्रिय पुत्र यीशु के जीवन, उसकी मृत्यु, उसके गाड़े जाने, और उसके पुनरुत्थान के बारे में चार अलग-अलग वर्णन दिये हैं। उसने हमें यीशु के सिद्ध जीवन, उसके महान आश्चर्यकर्म, और उसकी नम्रता और दीनता का इतिहास दिया है। जब यीशु यहूदिया, सामरिया, और गलील के स्थानों में गया, उसने वहां भले काम किये। परमेश्वर ने हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक उपलब्ध कराई, और हमें इतिहास की बहुत सी बातों से परिचित कराया जैसे कि परमेश्वर के दाहिने हाथ की ओर यीशु का स्वर्गारोहण होना (प्रेरितों 1); प्रेरितों पर पवित्र आत्मा का उतरना जिसके फलस्वरूप कलीसिया की स्थापना हुई; यरुशलेम से लेकर रोमी साम्राज्य और पूरे संसार भर में सुसमाचार का फैलाव होना (प्रेरितों 2:38 और रोमियों 10:18)। फिर, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित होते हुए पौलुस, याकूब, यूहन्ना, पतरस, और यहूदा सबने मिलाकर लगभग 21 पत्रियां लिखीं, जिनमें बताया गया है कि किस तरह से मसीहीयों को इस संसार में रहते हुए अपना जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है अर्थात् किस तरह से उन्हें ''बर्ताव करना चाहिए'' (1 तीमुथियुस 3:15)। आखिर में, यीशु का प्रकाशितवाक्य जो कि स्वर्गदूत द्वारा यूहन्ना को पतमुस नामक टापू में दिया गया था। इस किताब में यीशु की शैतान पर विजय और कलीसिया की संसार पर विजय की बात के बारे में घोषणा की गई है (प्रकाशितवाक्य 20 से 22 अध्याय)।

अब सवाल यह है, कि क्या मैं वो चाहता हूं जो परमेश्वर मुझसे चाहता है?

इस बात को समझना काफ़ी सरल है कि परमेश्वर को क्या चाहिए क्योंकि उसने यह बात अपनी सिद्ध इच्छा में प्रगट की है-

अब क्या हम मसीह में अपने मन के नए हो जाने से बदल जाएंगे या हम संसार के सदृश बन जाएंगे? (रोमियों 12:1-2)। यह एक ऐसा चुनाव है जो यह तय करेगा कि हम अनन्तकाल में कहां रहेगें।

अपने पहाड़ी उपदेश में यीशु ने मत्ती 7:21 में बड़ी ही स्पष्टता से कहा था कि ''जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु **वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।**''

मनुष्य को एक निष्कर्ष पर पहुंचने की आवश्यकता है!

अरियुपगुस पहाड़ पर पौलुस अपने ज़माने के महान बुद्धिजीवी व्यक्तियों के सामने प्रगट हुआ (प्रेरितों 17)। पौलुस ने बड़े ही दु:खी मन से इस बात का वर्णन किया था, कि किस तरह से एथेंस के लोग झूठे देवी-देवताओं और भिन्न-भिन्न प्रकार की मूरतों की उपासना कर रहे थें।

फिर, उसने उन्हें उस परमेश्वर के बारे में बताया जिसने ''पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया'' (प्रेरितों 17:24)। उसने उन्हें याद दिलाया कि, ''हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों 17:28)। आखिर में उसने उनसे कहा, ''परमेश्वर ने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है, और उसे मरे हुओं में से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है'' (प्रेरितों 17:31)। उस दिन जब पौलुस ने अपने प्रचार को समाप्त किया, ''कुछ तो ठट्ठा करने लगे, और कुछ ने कहा, 'यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे'.....परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया'' (प्रेरितों 17:32-33)।

किस तरह से आप सुसमाचार का स्वागत करेंगे? क्या आप यीशु मसीह का ठट्टा उड़ाएंगे? क्या आप उसकी बातों को सुनने के लिये स्वयं इच्छा रखेंगे? क्या आप उसकी बातों का मज़ाक उड़ायेंगे।

क्या आप यीशु मसीह में विश्वास करने के लिये तैयार हैं?

आपके पास क्या विकल्प है? किसके पास आप जाएंगे? किसके पास अनंत जीवन की बातें है? नि:सन्देह केवल यीशु के पास।

फ्रैड ऐल. डिलन
FRED L. DILLON

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिए:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398, नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं:
09911719517

बाइबल की एक सच्ची कलीसिया

वो कलीसिया जिसे स्वयं यीशु मसीह ने बनाया

मसीह की कलीसियाएं तुम्हें नमस्कार करती हैं (रोमियों 16:16)।

उद्धार का मार्ग क्या है?

1. **परमेश्वर के वचन को सुनना:** ''अत: विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)।
2. **परमेश्वर पर विश्वास करना:** ''इसलिये मैं ने तुम से कहा, कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे'' (यूहन्ना 8:24)।
3. **अपने पापों से मन फिराना:** ''इसलिये परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों 17:30)।
4. **इस बात का अंगीकार करना कि यीशु जीवते परमेश्वर का पुत्र है:** ''फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया, मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है'' (प्रेरितों 8:37)।
5. **अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अन्दर जाकर बपतिस्मा लेना:** ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)।
6. **मृत्यु तक परमेश्वर के प्रति विश्वासी बने रहना:** ''...प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशितवाक्य 2:10)।

बाइबल की एक सच्ची कलीसिया

इस कलीसिया की स्थापना करनेवाला अर्थात् इसका संचालक स्वयं यीशु मसीह है क्योंकि..

1. उसने अपने बेशक़ीमती लहू से इस कलीसिया को मोल लिया है (प्रेरितों 20:28)।
2. कलीसिया को बनानेवाला यीशु मसीह है (मत्ती 16:18)।
3. यीशु मसीह अपनी कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23)।
4. यीशु मसीह व्यवस्था या नियम देने वाला है (यूहन्ना 12:48)।
5. यीशु मसीह एक मज़बूत चट्टान है जिस पर कलीसिया को बनाया गया है (मत्ती 16:18)।
6. यीशु मसीह ही केवल इस कलीसिया की नींव है (1 कुरिन्थियों 3:11)।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया का सिर प्रभु यीशु मसीह है

इस सच्ची कलीसिया का संचालक स्वयं यीशु मसीह है क्योंकि.....

1. उसने अपने लहू से इस कलीसिया को मोल लिया है (प्रेरितों 20:28)।
2. इसे यीशु मसीह द्वारा बनाया गया है (मत्ती 16:18)।
3. यीशु मसीह स्वयं अपनी कलीसिया का सिर है (इफिसियों 5:23)।
4. यीशु मसीह एक सच्चा न्यायधीश है (यूहन्ना 12:48)।

5. यीशु मसीह एक मज़बूत चट्टान है जिस पर इस कलीसिया को बनाया गया है (मत्ती 16:18)।
6. यीशु मसीह इस कलीसिया की केवल एक मात्र नींव है (1 कुरिन्थियों 3:11)।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया की स्थापना 33 ई. सन में यरुशलेम में की गई थी

1. भविष्यवाणी का पूरा होना- यरुशलेम (यशायाह 2:2-3)।
2. भविष्यवाणी का पूरा होना - कब (दानिय्येल 2:31-45)।
3. पूरी सामर्थ के साथ इसका आना (मरकुस 9:1; लूका 24:49)।
4. पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया सामर्थ के साथ आई (प्रेरितों 2:1-4)।
5. कलीसिया का जन्मदिन (प्रेरितों 2)।

बाइबल पर आधारित कलीसिया का विभिन्न रूप से वर्णन किया गया है

1. ''अपनी कलीसिया'' (मत्ती 16:18) (यीशु की)।
2. ''राज्य'' (मत्ती 16:18-19; कुलुस्सियों 1:13) (यीशु का)।
3. ''कलीसिया'' (प्रेरितों 2:47; कुलुस्सियों 1:18)।
4. ''मसीह की देह'' (इफिसियों 1:22-23; कुलुस्सियों 1:18)।
5. ''परमेश्वर की कलीसिया'' (1 कुरिन्थियों 1:2)।
6. ''मसीह की कलीसिया'' (रोमियों 16:16)।
7. ''जीवते परमेश्वर की कलीसिया'' (1 तीमुथियुस 3:15)।

किसी भी व्यक्ति को बाइबल की इस सच्ची कलीसिया की सदस्यता किस प्रकार से मिलती है?

1. जिन पुरुषों और स्त्रियों ने पानी के अंदर जाकर मसीह में बपतिस्मा लिया हैं (प्रेरितों 8:12)।
2. जिन्होंने मसीह में विश्वास किया हैं और उसके नाम में बपतिस्मा लिया हैं (मरकुस 16:16)।
3. जिन्होंने ने अपने पापों से मन फिराया और मसीह के नाम में बपतिस्मा लिया हैं (प्रेरितों 2:38)।
4. जिन्होंने अपने मुंह से इस बात का अंगीकार किया हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है (रोमियों 10:9-10)।
5. जो प्रभु के प्रति विश्वासी और आज्ञाकारी हैं (रोमियों 6:1; इब्रानियों 5:8-9)।
6. जो बपतिस्मे के द्वारा अपने पापों की क्षमा प्राप्त करने के लिये पानी के अंदर गाड़े गए हैं (रोमियों 6:3-5; कुलुस्सियों 2:12)।
7. हर एक देश-प्रदेश के लोग इस कलीसिया के सदस्य बन सकते हैं (प्रेरितों 10:34-35)।
8. जिन्होंने अपने पापों से उद्धार पाया हैं (प्रेरितों 2:47) वे प्रभु द्वारा इसमें मिलाये जाते हैं।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया का संगठन क्या है?

1. स्वतंत्र मसीह की मण्डलियां (प्रेरितों 14:23)।
2. कलीसिया यीशु मसीह के आधीन है (1 पतरस 5:1-4)।
3. कलीसिया का संगठन् अध्यक्षों या ऐल्डरों द्वारा नियंत्रित किया जाता है और चलाया जाता है (तीतुस 1:5-9; इब्रानियों 13:17)।
4. कलीसिया के भौतिक कार्यों के लिये अर्थात् ''भोजन इत्यादि की सेवा (प्रेरितों 6:1-6)'' के लिये डीकनों या सेवकों

का कार्य होता है (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

5. कलीसिया में सदस्यों को सिखाना-पढ़ाना बाइबल के शिक्षकों द्वारा किया जाता है (इब्रानियों 5:12-14)।
6. कलीसिया के सिखाने-पढ़ाने में प्रचारकों का विशेष योगदान होता है (रोमियों 10:13-15)।
7. कलीसिया की सेवा में हर एक सदस्य की भूमिका काफ़ी महत्वपूर्ण है (रोमियों 12:4-8)। इसलिये प्रत्येक का योगदान आवश्यक है।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया की उपासना क्या है?

1. इस कलीसिया में आराधना या उपासना पूरी आत्मा और सच्चाई में की जाती है (यूहन्ना 4:24)।
2. परमेश्वर ने हर सप्ताह का पहिला दिन-सन्डे (रविवार), उपासना के लिये निर्धारित किया है (प्रेरितों 20:7)।
3. कलीसिया हर सप्ताह के पहिले दिन, इकट्ठा होकर प्रभु भोज में हिस्सा लेती है जिसके द्वारा क्रूस पर दिये गए यीशु के महान बलिदान को याद किया जाता है (1 कुरिन्थियों 11:20-29)।
4. नए नियम की कलीसिया में मसीही लोग बिना किसी बाज़े गाजे के, एक साथ मिलकर परमेश्वर के लिये गीत गाते हैं (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। गीतों को गाकर वे उसकी प्रशंसा करते हैं।
5. नए नियम की कलीसिया में मसीही लोग अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार, और पूरी स्वतंत्रता और उद्धारता के साथ, हर सप्ताह के पहिले दिन परमेश्वर के कार्यों के लिये चंदा देते हैं (1 कुरिन्थियों 16:1-2)।
6. नए नियम की कलीसिया में मसीही लोग हर सप्ताह के पहिले दिन एक साथ मिलकर परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं (प्रेरितों 2:42; 1 कुरिन्थियों 14:15)।
7. नए नियम की कलीसिया में हर सप्ताह के पहिले दिन परमेश्वर के वचन का प्रचार होता है (प्रेरितों 20:7)।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया का कार्य क्या है?

1. पाप में खोए हुए संसार में सुसमाचार को ले जाना (मरकुस 16:15)।
2. ऐसे मसीही जो अपने विश्वास से भटक गए या गिर चुके हैं, उन्हें बचाना अर्थात् वापस कलीसिया में लाना (याकूब 5:19-20)।
3. परमेश्वर के वचन को सिखाना और लगातार सिखाते रहना (2 तीमुथियुस 2:15)।
4. गरीबों की सहायता करें विशेष करके उन गरीब भाइयों और बहनों की जो मसीह में हमारे साथ विश्वासी हैं (गलतियों 6:10)।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया की शिक्षा क्या है?

1. केवल परमेश्वर का वचन (प्रकाशित-वाक्य 22:18-19)।
2. नया नियम (इब्रानियों 9:15)।
3. सुसमाचार (रोमियों 1:16; गलतियों 1:6-9)।
4. मनुष्यों की आज्ञाओं और शिक्षाओं को नहीं सिखाया जाना चाहिए (मरकुस 7:7)।

बाइबल की इस सच्ची कलीसिया के सदस्यों को किन नामों से जाना जाता है?

1. पवित्र लोग (1 कुरिन्थियों 1:2)।
2. भाई (प्रेरितों 15:22-23)।

3. सदस्य (रोमियों 12:4-5)।
4. मसीही (प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16)।
5. परमेश्वर की सन्तान (रोमियों 8:16)।
6. याजक (1 पतरस 2:9)।

नए नियम की कलीसिया बनाम साम्प्रदायिक कलीसियाएं

बाइबल की सच्ची कलीसिया कोई साम्प्रदायिक कलीसिया नहीं है। सौ वर्षों के पूर्व ही यीशु ने अपनी कलीसिया की स्थापना की थी जब कोई साम्प्रदायिक कलीसिया विद्यमान नहीं थी। साम्प्रदायिक कलीसियाओं को मनुष्यों ने बनाया है, परन्तु यीशु ने स्वयं अपनी कलीसिया को बनाया है। यीशु ने एक बार इस तरह से कहा था कि- **''हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा'' (मत्ती 15:13)।**

यीशु ने यह भी कहा था कि- **''ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं और उनका मन मुझ से दूर रहता है'' (मत्ती 15:9)।**

आपके लिये कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्न!

1. क्या यीशु मसीह ने आपकी कलीसिया की स्थापना की थी? 2. क्या यीशु आपकी कलीसिया के लिये नियमों को बनाता है? 3. क्या आपकी कलीसिया की स्थापना 33 ई. सन में हुई थी? 4. क्या आपकी कलीसिया की शुरूआत यरुशलेम में हुई थी? 5. क्या आपकी कलीसिया वही कलीसिया है जिसके बारे में जितनी भविष्यवाणीयां जो बाइबल में की गई थीं, वे सारी पूरी हुई? 6. क्या आपकी कलीसिया की शुरूआत सामर्थ के साथ की गई थी? 7. क्या आपकी कलीसिया का नाम बाइबल की शिक्षा के अनुसार है? 8. क्या आपकी कलीसिया एक स्वतंत्र कलीसिया है? 9. क्या आपकी उपासना बाइबल की शिक्षा के अनुसार है या परमेश्वर के प्रति आपकी उपासना व्यर्थ है? 10. क्या आपने प्रभु यीशु मसीह में पानी के अंदर जाकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लिया है? 11. क्या आप सिर्फ़ बाइबल की शिक्षा को मानते हैं? 12. क्या आप अपने ऊपर एक साम्प्रदायिक नाम को रखते हैं?

बाइबल की एक सच्ची कलीसिया			
कब बनी?	**कहां बनी?**	**किसने बनाया?**	**उसका नाम?**
33 ई. सन्	यरुशलेम में	यीशु मसीह ने	कई ईश्वरीय नाम
मनुष्यों की बनाई हुई कलीसियाएं			
कब बनी?	**कहां बनी?**	**किसने बनाया?**	**उसका नाम?**
606	रोम	बॉनीफेस III	कैथलिक
1520	जर्मनी	मार्टिन लूथर	लूथरन
1534	इंग्लैंड	हेन्री VIII	एपिस्कोपल
1536	स्वीज़रलैंड	जॉन कैल्विन	प्रैस्बिटेरियन
1550	इंग्लैंड	रॉबर्ट ब्रॉनी	कॉनगरीगेशनल
1607	हौलैंड	जॉन स्मिथ	बैपटिस्ट
1739	इंग्लैंड	जॉन वैस्ली	मैथोडिस्ट
1830	अमेरिका	जोस्फ़ स्मिथ	मौरमन
1830	अमेरिका	विलयम मिलर	एडवेनटिस्ट
1866	अमेरिका	मेरी बेकर एड्डी	क्रिश्चियन साइनटिस्ट
1872	अमेरिका	चार्ल्स ट. रस्सल	जहोवा विट्नस्
निरंतर	सब जगह	विभिन्न प्रकार के लोग	साम्प्रदायिक नामों के साथ

लुईस रश्मोर
Louis Rushmore

अधिक जानकारी तथा बाइबल के पत्र व्यवहारिक पाठों के लिये हमें इस पते पर लिखिये:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स 4398
नई दिल्ली-110019
ई. मेल: vinay_david 2002@yahoo.co.in
बाइबल कोर्स करने के लिये आप SMS भी कर सकते हैं: 09911719517